10

आदमी जिसने जीवन को आशीषित किया

(2 राजाओं 5:1–19)

नये नियम में एलीशा का उल्लेख केवल एक बार है। जब यीशु नासरत के आराधनालय में प्रचार कर रहा था तो उसने कहा, ''एलीशा भविष्यवक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, पर नामान सूरयानी को छोड़ उन में से कोई शुद्ध नहीं किया गया'' (लूका 4:27)। मसीह यहूदियों को यह समझाना चाहता था कि परमेश्वर की दिलचस्पी उनके साथ–साथ अन्य जातियों में भी थी, परन्तु इस हवाले से उसके सुनने वाले चिढ़ गए (आयत 28)। नामान की चंगाई की कहानी से वे परिचित थे, परन्तु स्पष्टतया यह पुराने नियम के उनके पसन्दीदा विवरणों में से एक नहीं थी। नामान विदेश था, जो परमेश्वर के लोगों का शत्रु था। उनके विचार से उसे कोढ़ी ही मरना चाहिए था!

हो सकता है कि इस्राएलियों को नामान की कहानी पसन्द न हो, पर आज के प्रचारकों में यह प्रसिद्ध है। यदि किसी प्रचारक के पास एलीशा के जीवन पर एक सरमन हो तो वह सरमन सम्भवतया नामान पर ही होगा। कई सरमन बनाने वाले नामान और आज के पापियों के बीच समानताएं देखते हैं। इस बाइबली विवरण में सिखाने और प्रचार करने की इतनी क्षमता है कि एक अकेले पाठ से इसके साथ न्याय नहीं हो सकता। इसलिए हम नामान की कहानी की चर्चा कई पाठों में करेंगे। इस प्रस्तुति में इस वचन पाठ की समीक्षा की जाएगी; अगले पाठ में इसकी सुसमाचारीय प्रासंगिकता बनाएंगे। तीसरे पाठ में एलीशा के सेवक गेहजी के कामों और उस परिस्थिति में उसके कामों के परिणामों पर ध्यान दिया जाएगा।

इस घटना का अध्ययन करते हुए इसके मूल उद्देश्य को समझना सहायक होगा। यह कहानी केवल एलीशा के आश्चर्यकर्मों को बताने के लिए नहीं लिखी गई। न ही इसे बाइबल में केवल कोढ़ के ईश्वरीय उपचार के बारे में शामिल किया गया है, बल्कि यह एक गैर यहूदी पर मूर्तिपूजा से जीवित परमेश्वर में विश्वास करने के ढंग का मार्मिक विवरण है।

नामान की स्थिति[1] (5:1-7)

रोगी आदमी

2 राजाओं 5 का आरम्भ उसके चरित्र का परिचय देते हुए होता है: ''अराम के राजा का नामान नाम सेनापति अपने स्वामी की दृष्टि में बड़ा और प्रतिष्ठित पुरुष था, क्योंकि यहोवा ने उसके द्वारा अरामियों को विजयी किया था, और यह शूरवीर था ...'' (आयत 1 क)।

आयत 1 नामान को आराम के वासी (अरामी) के रूप में बताती है, परन्तु यीशु ने उसे ''नामान सूरयानी'' कहा (लूका 4:27)। पुराने नियम में ''अराम'' फलस्तीन के उत्तर–उत्तर पूर्व

इलाके लिए इस्तेमाल किया जाता था, जिसकी राजधानी दमिश्क थी (देखें 2 राजाओं 8:7)। नये नियम के समयों तक यह इलाका सूरिया के नाम से प्रसिद्ध हो गया (मत्ती 4:24; लूका 2:2; प्रेरितों 15:41; इस पुस्तक में ''एलीशा के समय में इस्राएल और आस-पास के देश'' मानचित्र देखें)। इसलिए कई अनुवादों में पुराने नियम में ''अराम'' की जगह ''सीरिया'' शब्द इस्तेमाल किया गया है (देखें 2 राजाओं 5:1; KJV)।

अराम देश एलिय्याह के जीवन की हमारी पहली पुस्तक में काफ़ी प्रसिद्ध था। इस्राएल के राजा अहाब ने अराम के राजा बेनहदद के साथ कई लड़ाइयां लड़ी थीं (1 राजाओं 20:1-45; 22:1-44)। अहाब उन लड़ाइयों में से एक में मारा गया था जब किसी अज्ञात धनुषधारी का तीर उसके कवच में नाज़ुक जगह पर धंस गया था (1 राजाओं 22:34, 35)। परन्तु एलीशा के जीवन के सम्बन्ध में अराम का उल्लेख यहां पहली बार मिलता है। शेष अध्ययनों में अराम के साथ शत्रुता बनी रहेगी (देखें 2 राजाओं 6:8, 24; 8:7, 28)। एलीशा के जीवन के अन्त में भी वह झगड़ा अभी तक चल रहा था (2 राजाओं 13:17-20क)।

नामान अराम का ''सेनापति'' था। NIV में उसे सेना का कमाण्डर बताया गया है। कालांतर में बेनहदद सेना की अनुगआई करता था (1 राजाओं 20:1, 26)। परन्तु ''बहादुर शूरमा'' नामन की अगुआई मान ली गई होगी। राजा नामन को महान व्यक्ति और ''बहुत सम्माननीय'' मानता था।

कइयों को यह पढ़कर आश्चर्य हो सकता है कि ''उसके द्वारा'' यानी मूर्तिपूजक कमाण्डर नामान के द्वारा ''यहोवा ने अरामियों को विजयी किया था।'' इस बात को समझें कि परमेश्वर देशों के मामलों में शामिल होता है और वह अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अविश्वासियों का भी इस्तेमाल कर सकता है (देखें यशायाह 44:28; यहेजकेल 30:24, 25; दानिय्येल 4:25)। उदाहरण के लिए जब परमेश्वर के लोग उसे ठुकरा देते थे तो यहोवा कई बार उन्हें काफ़िर देशों को उन पर कब्जा करवाकर उन्हें दण्ड देता था (2 राजाओं 13:3)। 2 राजाओं 5:1 में ''विजयी'' अहाब और उसकी सेना को आराम द्वारा पराजित करना हो सकता है। बाइबल से बाहर की यहूदी परम्परा के अनुसार नामान ही वह तीरअन्दाज़ था, जिसके तीर से अहाब मरा था।[2]

नामान के खाते में काफ़ी प्रभावशाली पद थे: वह अरामी सेना का सेनापति था, एक महान और सम्माननीय व्यक्ति, बहादुर और विजयी योद्धा। फिर ये अभागे शब्द मिलते हैं: ''परन्तु कोढ़ था'' (आयत 1ख)।

बाइबल में ''कोढ़ी'' कई बीमारियों और स्थितियों के विवरण के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सामान्य शब्द है। आवश्यक नहीं कि हर जगह यह आज वाला कोढ़ हो (कुष्ठ रोग)। ऐसा होने के कारण कई लेखक नामान की स्थिति को कम करके सुझाव देते हैं कि हो सकता है कि उसे कोई और गम्भीर चरम रोग हो।[3] हमारे वचन पाठ में दिए कई विवरण इस बात का संकेत देते हैं कि इस सिपाही को छोटी-मोटी चिकित्सकीय समस्या नहीं थी। पहले तो वे चरम माप हैं जहां चंगाई ढूंढ़ने के लिए नामान जाने को तैयार था। दूसरा यह तथ्य है कि इस रोग के सम्बन्ध में इस्राएल के राजा की बात से उसके जीवन-मरण की स्थिति का सुझाव मिलता है (आयत 7)।

अन्त में यह बात है कि जब दूसरे आदमी को नामान वाला कोढ़ लगा, तो वह आदमी ''*हिम सा श्वेत* कोढ़ी'' हो गया (आयत 27)। प्राचीन और आधुनिक लेखक बीमारी के खतरनाक

रूप कोढ़ की "सफ़ेद किस्म"[4] को "सबसे" खतरनाक रूप कहते हैं।[5] "श्वेत कोढ़" का वर्णन उसके रूप में किया जाता है जिसमें व्यक्ति का रंग उस कोढ़ से मिलता-जुलता है, जिसे आधुनिक विज्ञान कोढ़ कहती है, इसका खतरनाक रंग होता है।[6] जब मूसा की बहन मरियम को कोढ़ हुआ तो वह "कोढ़ से हिम के समान श्वेत हो गई" (गिनती 12:10)। उसके भाई हारून ने कहा कि वह "मरे हुए के समान" थी (आयत 12)। नामान को, अगर यही नहीं तो ऐसी ही व्याधि हुई थी। वह एक खतरनाक, लाइलाज बीमारी यानी एक ऐसी व्याधि जो निश्चित रूप से धीरे-धीरे मौत बन जानी थी से दुखी था।[7]

नामान निश्चित रूप से इलाज के लिए अराम में हर जगह इलाज ढूंढ़ने के बाद निराश हो गया था, तब उसे कुछ लाभ नहीं मिला था। अरामी चिकित्सक कुछ नहीं कर पाए थे; उसके काफ़िर "देवता" किसी काम नहीं आए थे। वह अब बहुत निराश हो गया था।

सहानुभूति से भरी एक लड़की

फिर किसी अप्रत्याशित स्रोत से सहायता आई। आयत 2 में हम पढ़ते हैं, "अरामी लोग दल बान्धकर इस्राएल के देश में जाकर वहां से एक छोटी लड़की बन्धुवाई में ले आए थे और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी।" अराम और इस्राएल के बीच लड़ाइयां होती रहती थीं (देखें 2 राजाओं 6:8, 9)।[8] अराम से आए सिपाहियों की टोलियां इस्राएल पर हमले करती रहती थीं (देखें 6:23ख)। ऐसे ही एक हमले के दौरान वे एक छोटी लड़की को उठा ले गए, जो नामान के घर में गुलाम बन गई थी।

एक पल के लिए अपने आप को इस दासी की जगह रखें। आपको अपने माता-पिता की स्नेही भुजाओं से छीन लिया गया और विदेशी धरती पर ले जाया गया है। बच्चों वाली खेले खेलने का आनन्द लेने के बजाय अब आपको दास के रूप में सेवा के लिए मजबूर किया जाता है। एक खुशहाल घर में रहने के बजाय आपका निवास उदासी से भरे घर में है। परमेश्वर का भय मानने वाले परिवार का भाग होने के बजाय आपके आस-पास बनावटी देवताओं की पूजा करने वाले लोग हैं। इस लड़की के लिए यह बड़ा कड़वाहट भरा और क्रोध दिलाने वाला होगा, परन्तु स्पष्टतया उसमें ऐसी कोई बात नहीं थी। वह अपनी बदकिस्मती के लिए परमेश्वर को कोस सकती थी (जैसा कई लोग करते हैं) पर उसने अपने विश्वास को बनाए रखा। वह इस बात से आनन्दित हो सकती थी कि उसकी किस्म खराब करने के लिए ज़िम्मेदार आदमी धीरे-धीरे और खतरनाक मौत मर रहा है, पर उसने ऐसा नहीं किया। अपने ऊपर अफ़सोस करने के बजाय उसे अपने दुख स्वामी पर तरस आया।

एक दिन वह नामान की पत्नी का काम कर रही थी, शायद अपनी मालकिन के बाल बना रही थी, जब उसने श्रीमती नामान से कहा, "जो मेरा स्वामी शोमरोन के भविष्यवक्ता के पास होता, तो क्या ही अच्छा होता! क्योंकि वह उसको कोढ़ से चंगा कर देता" (आयत 3)। मुझे यह बात ज़बर्दस्त लगती है कि इस लड़की को एलीशा के बारे में मालूम था और यह कि उसका विश्वास था कि वह प्राचीन समयों की सबसे खतरनाक बीमारियों में एक का इलाज कर सकता है। उसके माता-पिता ने उसे एलीशा के कारनामों की कहानियां बताई होंगी। वह चाहे पराए देश में थी पर वह यह नहीं भूली थी कि वह परमेश्वर की चुनी हुई, अर्थात सामर्थी नबी वाले

आशीषित लोगों में से थी! इसके अलावा मुझे यह भी मन को छूने वाला लगता है कि यह छोटी लड़की अपने विश्वास को अपने पकड़ने वालों को बताने का तैयार थी। इस दासी के बारे में हम बहुत कम जानते हैं, यहां तक कि उसका नाम भी नहीं, पर पुराने नियम में सबसे शानदार लोगों में से वह एक है।

वह लड़की यूं ही कहीं अपनी किसी बात के प्रभाव को देखकर चकित हुई होगी। नामान की पत्नी ने ज़ाहिर है कि अपने पति को बता दिया कि उस लड़की ने क्या कहा था और यह सिपाही राजा के पास जाकर उस लड़की की बात बताने लगा (आयत 4)। बिना झिझक के राजा ने नामान को उस अद्‌भुत काम करने वाले नबी की तलाश के लिए भेजने की योजनाएं बना ली (आयत 5क)। यह तथ्य कि नामान ने इस छोटी दासी के सुझाव को सुना, उसकी निराशा का संकेत जाता है। यह तथ्य कि राजा ने नामान को अपनी तलाश के लिए प्रोत्साहित किया, अपने सेनापति के लिए राजा के मन में बड़े सम्मान और दिलचस्पी को दिखाता है।

नौकरशाही की सोच होने के कारण राजा को लगा कि उसे ''आधिकारिक माध्यमों में से जाना'' आवश्यक है। उसने सोचा होगा कि एलीशा इस्राएल के राजा के मातहत होगा जैसे उसके दरबार के जादूगर उसके मातहत थे। इस कारण हाकिम ने सामान को इस्राएल के राजा के पास भेजा और उस सम्राट के नाम एक चिट्ठी भी लिख दी (आयत 5क)।

''यह विश्वदर्शन होने के कारण कि पैसे से कुछ भी नहीं खरीदा जा सकता।'' नामान को लगा कि उसे नबी की सेवाएं खरीदनी पड़ेंगी। इसलिए उसने कुछ धन इकट्ठा कर लिया: ''दस किक्कार चान्दी और छह हजार टुकड़े सोना, और दस जोड़े कपड़े साथ लेकर रवाना हो गया'' (आयत 5ग)। यह अनुमान लगाया जाता है कि चांदी के दस किंकार का भार लगभग 750 पौंड (340 किलोग्राम) था जबकि छह हज़ार टुकड़े सोने का भार लगभग 150 पौंड (70 किलोग्राम) था।[9] चांदी की कीमत डॉलर 20 हज़ार और सोने की डॉलर 60 हज़ार आंकी गई है।[10] दस जोड़े कपड़े भी बहुत महंगे होंगे, इतने महंगे कि किसी खास मौके या राजकीय समारोहों के समय पहने जाएं।

भयभीत राजा

जब सब कुछ तैयार हो गया, तो नामान निकल पड़ा (आयत 5ख)। वह अपने कारवां के साथ दक्षिण-दक्षिण पश्चिम की ओर एक सौ या अधिक मील चलकर इस्राएल की राजधानी सामरिया में पहुंचा। आयत 6 कहती है, ''वह इस्राएल के राजा के पास [अराम के राजा का] पत्र ले गया'' (आयत 6क)। इस्राएलियों और अरामियों के युद्ध होते रहते थे, इसलिए नामान और उसके साथियों ने देश में प्रवेश करने पर आक्रमण या कब्जा क्यों नहीं किया? शायद यह घटना बीच-बीच में लड़ाइयों से आराम मिलने के समय की थी (देखें 6:23ख)। हो सकता है कि इस्राएल में प्रवेश करने पर नामान ने अस्थाई युद्ध विराम का संकेत दिया[11] और राजा से बात करने की अनुमति मांगी। जो भी हो, उसे राजा के महल में जाने की अनुमति दी गई।

नामान के अपने सेवकों, रथों, घोड़ों और खज़ानों से लदे खच्चरों को लेकर सामरिया नगर में प्रवेश करने की कल्पना करें (देखें 5:5ख, 9क)। यह जुलूस परेड की तरह लग रहा होगा! नगर के लोग यह देखकर चकित रह गए होंगे कि मुख्य व्यक्ति वह आदमी था, जिसका शरीर

''श्वेत कोढ़'' से बिगड़ा हुआ था। मूसा की व्यवस्था में आज्ञा थी कि कोढ़ियों को शेष लोगों से अलग रखा जाए (देखें लैव्यव्यवस्था 13:45, 46), पर यह कोढ़ी तो बड़ी शान से उनकी गलियों में घूम रहा था!

महल में पहुंचने पर नामान के सेवकों ने वह सब खज़ाना दिखाया होगा उस खज़ाने की नुमाइश लगाई होगी जो वह लेकर आया था। फिर वह अपना पत्र राजा के पास ले जाए जाने पर रुक गया होगा।

दृश्य बदलकर राजा के दरबार में चला जाता है। बेशक राजा यह पता चलने के समय से कि बेनहदद की ओर से राजनयिक मिशन आ रहा है, आशंकित था (1 राजाओं 20:2, 3 से तुलना करें), विशेषकर इसलिए कि उस मिशन की अगुआई वह व्यक्ति कर रहा था जिसने कई बार इस्राएल की सेनाओं को पराजित किया था। यह घृणित अरामी क्या चाह रहे हो सकते हैं? फिर दरबार के एक अधिकारी ने अराम की शाही मोहर लगा एक पत्र उसके हाथ में दिया। क्या उस पत्र को पढ़ते हुए राजा के हाथ कांपे? उसके दिमाग में आया होगा कि यह कोई राजनीतिक चाल है, फिर उसे माजरा समझ आया: ''कि जब यह पत्र तुझे मिले, तब जानना कि मैं ने नामान नाम अपने एक कर्मचारी को तेरे पास इसलिए भेजा है, कि तू उसका कोढ़ दूर कर दे'' (2 राजाओं 5:6ख)।

''इस पत्र के पढ़ने पर इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े'' (आयत 7क; 2 शमूएल 13:19; 2 इतिहास 34:27; एज्रा 9:3; यिर्मयाह 36:24 से तुलना करें)। वह बहुत परेशान राजा था! हम पक्का नहीं बता सकते कि इस्राएल का यह कौन सा राजा था पर सम्भवतया वह वही था जिसे हम पहले मिले थे यानी योराम। वह पुकार उठा, ''क्या मैं मारने वाला और जिलाने वाला परमेश्वर हूं कि उस पुरुष [राजा बेन्हदद] ने मेरे पास किसी को इसलिए भेजा है कि मैं उसका कोढ़ दूर करूं?'' (2 राजाओं 5:7ख)। अपने मन में वह केवल एक ही निष्कर्ष पर पहुंच पाया ''सोच विचार तो करो, वह मुझ से झगड़े का कारण ढूंढ़ता होगा'' (आयत 7ग; 1 राजाओं 20:7 से तुलना करें)। नामान के कोढ़ के सम्बन्ध में यह ध्यान देने वाली बात है कि एक छोटी लड़की को तुरन्त एलीशा का ध्यान आया गया पर यहूदी राजा को नहीं आया।

नामान का शुद्ध होना (5:8-14)

जो बात किसी हाकिम को परेशान कर देती है वही उसकी प्रजा को भी परेशान कर देती है। अब राजा की भढ़ास एक आदमी से दूसरे तक जाते हुए नबी तक पहुंच गई। ''यह सुनकर कि इस्राएल के राजा ने अपने वस्त्र फाड़े हैं, परमेश्वर के भक्त एलीशा ने राजा के पास कहला भेजा, तू ने क्यों अपने वस्त्र फाड़े हैं?'' (2 राजाओं 5:8क)। एक अर्थ में उसने राजा को आश्वस्त किया कि घबराने वाली कोई बात नहीं है, क्योंकि अराम की ओर से कोई आक्रमण नहीं होने वाला। एलीशा ने आगे कहा, ''वह [नामान] मेरे पास आए, तब जान लेगा कि इस्राएल में भविष्यवक्ता तो है'' (आयत 8ख)। उसके कहने का अर्थ था, ''और अन्त में *तुझे भी* पता चल जाएगा कि इस्राएल में एक नबी रहता है!''

यदि नामान को पत्र पर राजा की प्रतिक्रिया की बात का पता चल गया होगा तो वह अवश्य निराश हुआ होगा। परन्तु उसकी आस फिर से जग गई जब उसे नबी के घर जाने का निर्देश

मिला। आखिर उसकी पत्नी की छोट दासी ने विशेष रूप से कहा था कि उसे चंगाई सामरिया के *नबी* से मिलेगी। नामान के साथियों के महल के मैदानों में से निकलने पर राजा ने राहत की सांस ली होगी।

फिर मैं नामान की शोभायात्रा के बाज़ारों में से होते हुए अन्त में एलीशा की कुटिया तक जाने पर सामरिया के लोगों के उनको देखने की कल्पना करता हूं। "तब नामान घोड़ों और रथों समेत एलीशा के द्वार पर आकर खड़ा हुआ [यानी रुक गया]" (आयत 9)। इस सिपाही ने खज़ाने लिए अपने सेवकों को नबी के अपने घर से बाहर निकलने पर उसके कदमों में रखने को तैयार, अपनी अपनी जगह खड़ा कर लिया होगा।

ईश्वरीय उपचार

परन्तु एलीशा सामने नहीं आया। इसके बजाय उसने एक दूत सम्भवतया गेहजी (देखें आयत 20) को संदेश देकर भेज दिया (आयत 10)। कुछ लोग नबी की ओर से शिष्टाचार की कमी पर चकित होते हैं, परन्तु घटनाओं की श्रृंखला का उद्देश्य याद रखें। परमेश्वर को नामान के शरीर की उतनी चिंता नहीं थी जितनी उसकी आत्मा की। नामान का मन उसे सच्चे परमेश्वर के रूप में स्वीकार करने से पहले तैयार किया जाना आवश्यक था और उस कमाण्डर को दीनता का सबक पहले सीखना आवश्यक था (लूका 14:11)। उसकी त्वचा के छोटे बच्चे के जैसी बनने से पहले (2 राजाओं 5:14), उसके मन का का छोटे बच्चे के मन जैसा बनना आवश्यक था (मत्ती 18:3, 4)।

गेहजी द्वारा लाया गया संदेश यह था: "तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा" (2 आयत 5:10ख)। "यहां 'डुबकी' शब्द पर ध्यान दें।"[12] आयत 14 कहती है "उसने डुबकी मारी"; CJB के अनुवाद में "उसने गोता लगाया।" यदि नामान बीस या इससे अधिक मील चलकर यरदन नदी तक जाता और सात बार डुबकी लगाता तो परमेश्वर ने उसके परिणामों की गारंटी दे दी: "तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा।"

सात डुबकियों की आवश्यकता क्यों थी? अंक "सात" का जिक्र पवित्र शास्त्र में बार-बार आया है (देखें उत्पत्ति 2:2; यहोशू 6:4) और आम तौर पर इसमें सिद्धता या पूर्णता का विचार होता है। इस मामले में कई डुबकियां लगाने की आज्ञा सम्भवतया इसलिए दी गई क्योंकि इससे यह लगने पर कि कुछ नहीं हुआ बार-बार डुबकी लगाते रहने के लिए विश्वास का होना आवश्यक था।

आरम्भिक प्रतिक्रिया

नामान ने उसे दिए गए निर्देशों पर क्या प्रतिक्रिया दी। वह "क्रोधित" था (आयत 11क)! वह नबी के व्यवहार से अपमानित हुआ था। सेनापति होने के कारण वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति था और उसके साथ वैसा व्यवहार नहीं किया गया, जैसा उसको आदत थी! इसके अलावा नबी के निर्देश देने से उसका अपमान भी हुआ। उसने कहा:

> मैं ने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा[13] से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा! क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयों से अत्तम नहीं हैं? क्या मैं उन में स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूं? (आयतें 11ख, 12क)।

''दमिश्क में शुद्ध जल की नदियां बर्फ से ढके अमुनुस के पहाड़ों से ... या हरमोन पहाड़ से बहती थी।''[14] यदि शुद्ध करने के लिए धोना आवश्यक था तो वे नदियां ''कीचड़ और गंदगी भरी''[15] यरदन से निश्चित रूप से अधिक उपयुक्त लगती होंगी।

नामान ने क्रोध में वहां से चलने के आदेश दे दिए। उसने अपने रथ का पहिया गुमाया और वह ''जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया'' (आयत 12ख)। जुलूस के निकलने के बाद एलीशा ने बाहर निकलकर उसे रोकने की कोशिश नहीं की। उसने नामान को उपचार बता दिया था और उसने मानने के लिए मज़बूर नहीं करना था। वह सिपाही अपने शेष जीवन में कोढ़ी रहने वाला था!

सौभाग्य से उसकी कम्पनी में दूसरे लोग अधिक स्पष्ट सोच वाले थे। एक सेवक ने सेनापति से नबी के पास जाने को कहा था और अब दूसरे सेवकों ने उसे नबी के निर्देशों को मानने के लिए समझाया। इन अनाम नायकों ने नामान को होश में लाया: ''हे हमारे पिता [लगाव वह सम्मान का शब्द] यदि भविष्यवक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता?'' (आयत 13क)। एक अर्थ में उन्होंने अपने स्वामी से पूछा, ''यदि नबी तुझे अत्यधिक कठिन या बहुत ही खतरनाक काम करने के लिए कहता तो? क्या तुम इस भयंकर बीमारी के इलाज के लिए *कुछ भी* करने को तैयार न हो जाते?'' नामान ने हिचकिचाते हुए हां में सिर हिलाया होगा।

सेवकों ने आगे कहा, ''फिर जब वह कहता है कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिए'' (आयत 13ख)। अन्य शब्दों में, ''तुझ से कोई महंगा काम करने के लिए कहने के बजाय जो कठिन हो, यह निर्देश स्पष्ट, सरल और मानने आसान है। तुम्हें किसी खतरनाक काम का जोखिम लेने के लिए कहने के बजाय, इसमें केवल एक खतना है कि लोग तुझ पर हंस सकते हैं और तुम्हें इससे निराशा होगी। तुम ने यहां तक पहुंचने के लिए कितना लम्बा और कठिन सफ़र किया है। तो फिर बीस मील और चलकर नबी के कहे अनुसार क्यों नहीं कर लेते? तुम्हारा क्या जाएगा सिवाय इसके कि तुम्हारी अकड़ टूट जाएगी?''

अन्तिम परिणाम

सेवकों के तर्क में दम था। दमिश्क में उत्तर की ओर जाने के बजाय नामान और उसके साथी सामरिया के पहाड़ी क्षेत्रों से तेज़ी से ढलानों से होते हुए यरदन घाटी के नीचे, एक हज़ार फुट से भी अधिक नीचे, ''चले गए'' (आयत 14क)। यदि नामान उस क्षेत्र के हिसाब से पूरी तेज़ चलता तो उसका सफ़र एक या दो दिन में पूरा होता।

फिर नामान और उसके साथियों के अन्त में यरदन के किनारे रुक जाने के दृश्य की कल्पना करें। नामान को अपनी सैनिक पोषाक उतारकर गंधले से पानी में डुबकी लगाते हुए देखें। क्या आपको लगता है कि उसका चेहरा क्रोध से लाल हो गया होगा? क्या उसने नदी के किनारों पर भीड़ लगाए अपने मातहतों में इधर-उधर से धीरे-धीरे हंसते सुना? तौभी वह तब तक पानी में

बैठता गया, जब तक केवल उसका सिर और कंधे दिखाई दे रहे थे। फिर उसने आंखें बंद की, सांस रोका और पानी में चला गया। वह बाहर आया, पानी उसके चेहरे पर से नीचे गिर रहा था और उसने सांस ली। उसने पानी अपने बालों से छिड़का, आंखें मली और फिर डुबकी लगाई। दो बार, तीन बार, चार, पांच, छह, बार-बार वह पानी के अन्दर अलोप हो जाता।

अन्त में वह सातवीं बार नीचे गया। इस बार जब वह दिखाई दिया तो एक अजीब बात हो गई थी! वचन कहता है कि उसने ''परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उस में सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया'' (आयत 14ख)। न केवल उसका कोढ़ जाता रहा बल्कि समय की बर्बादी भी नहीं हुई! उसकी त्वचा तीस या चालीस साल के आदमी की त्वचा जैसी नहीं बल्कि ''छोटे लड़के की त्वचा सी'' हो गई!

नामान का मनपरिवर्तन (5:15-19क)

नामान का शरीर नाटकीय रूप से बदल गया था पर अपने स्वस्थ हुए तन को आश्चर्यचकित होते देखते हुए उसके मन और हृदय में इससे भी ज़बर्दस्त बदलाव आया। यहोवा के नबी ने वह किया था जो दूसरे नहीं कर पाए, यहां तक कि अराम के ''देवताओं'' के पुजारी भी नहीं। नामान केवल एक ही सम्भावित निष्कर्ष पर पहुंचा कि एलीशा एक मात्र सच्चे परमेश्वर यहोवा का सच्चा नबी होगा!

इस स्थिति की कल्पना करने की कोशिश करें। अत्यधिक प्रभावित आदमी के देश में पहुंचने पर दीनता में सज़दे में झुकते और भूमि पर खामोशी से लेटे परमेश्वर के धन्यवाद के लिए आंखों से आंसू बहते देखने की कल्पना करें।''वह सचमुच कैसा परमेश्वर है!'' उसके मन से निकला होगा। फिर नामान धूल में से उठा, अपने कपड़े बदले और जोश भरी उत्सुकता के साथ अपने रथ में बैठ गया और सामरिया में वापस चलने की आज्ञा दी।''सामरिया को वापस!'' पीछे रह गया था और कम्पनी आगे निकल गई थी। यह एक विजयी जुलूस था, नामान का नहीं बल्कि परमेश्वर का![16]

विलक्षण अंगीकार

नामान आराम को वापस जाने के लिए चौथा भाग निकल आया था; घर तुरन्त अपनी खुशखबरी बताने के लिए परमेश्वर में जाने के बजाय उसने अपने कदम धन्यवाद जताने और अपना सारा विश्वास बताने के लिए मोड़ लिए। ''तब वह अपने सब दल बल समेत परमेश्वर के भक्त के यहां लौट आया'' (आयत 15क)।

इस बार एलीशा उससे मिलने के लिए बाहर आया और नामान ''उसके सम्मुख खड़ा हो'' गया (आयत 15ख)। यह कहते हुए कि ''उसके सम्मुख खड़ा होकर कहने लगा; सुन, अब मैं ने जान लिया है कि समस्त पृथ्वी में इस्राएल को छोड़ और कहीं परमेश्वर नहीं है'' (आयत 15ग)। उसका अंगीकार अद्‌भुत है कि उसने यहोवा को न केवल इस्राएल के परमेश्वर में बल्कि ''समस्त पृथ्वी में'' *एकमात्र* परमेश्वर के रूप में देखा! अंधकार भरे युग में उसने यहोवा के वैश्विक होने को समझ लिया था! उसके शब्दों से ''इस्राएलियों को शर्मिंदा करते हैं जो इस

विचार में डगमगाते रहते थे कि बाल और [यहोवा] दोनों ही देवता हैं या केवल [यहोवा] ही परमेश्वर है।''[17]

धन्यवाद प्रकट करने के लिए नामान ने एलीशा को वह सोना व चांदी और कपड़े देने की कोशिश की जो वह अपने साथ लेकर आया था: ''इसलिए अब अपने दास की भेंट ग्रहण कर'' (आयत 15घ)। परन्तु नबी ने इनकार कर दिया: ''यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहता हूं उसके जीवन की शपथ मैं कुछ भेंट न लूंगा'' (आयत 16क)। सिपाही ने विनती की, परन्तु वह भेंटें लेने से इनकार करता रहा (आयत 16ख)।

विशेष परिस्थितियों में एलीशा उपहार लेने का विरोधी नहीं था (देखें 4:8–11, 42), परन्तु उसे लगा कि नामान से कुछ भी स्वीकार करना उचित नहीं होगा। हो सकता है कि वह उस सिपाही को समझाना चाहता हो कि वह ''धन के लोभी'' अराम के झूठे नबियों जैसा नहीं है। शायद वह यह प्रभाव नहीं देना चाहता था कि चंगाई के लिए परमेश्वर नहीं, बल्कि वह ज़िम्मेदार है।

असामान्य विनतियां

कहानी का यह भाग नामान द्वारा की गई विनतियों के साथ समाप्त होता है। पहले उसने एलीशा से कहा, ''अच्छा, तो तेरे दास को दो खच्चर मिट्टी मिले, क्योंकि आगे को तेरा दास यहोवा को छोड़ और किसी ईश्वर को होमबलि वा मेलबलि न चढ़ाएगा'' (आयत 17)। नामान ने वेदी के लिए सामग्री के रूप में मिट्टी मांगी होगी (निर्गमन 20:24 से तुलना करें), या हो सकता है कि वेदी के आधार के रूप में जिस पर यहोवा को बलिदान भेंट किए जाने थे। इस असामान्य विनती की सामान्य व्याख्या यह है कि सिपाही को लगा कि यहोवा एक क्षेत्रीय परमेश्वर है और उसे बलिदान भेंट करने के लिए इस्राएल से मिट्टी लेना आवश्यक है, पर यह यहोवा को विश्वव्यापी परमेश्वर के रूप में मानने की उसकी बात के विपरीत होगा (आयत 15)। कम से कम यह तो साफ़ लगता है कि नामान को लगा कि किसी न किसी तरह इस्राएल की ज़मीन सच्चे परमेश्वर के साथ इसके जुड़ाव के कारण ''विशेष'' है (निर्गमन 3:5 से तुलना करें)। इस कारण उसने इस में से कुछ मिट्टी घर ले जानी चाही। हम पर्यटकों द्वारा प्रत्येक वर्ष ''पवित्र भूमि'' से लाए गए प्रतीकों से इसकी तुलना कर सकते हैं।

नामान के मन में कोई और बात भी थी, कोई ऐसी बात जो उसे परेशान कर रही थी। एलीशा के पास दोबारा वापस आने पर, उसके दिमाग में आया था कि उसके नये विश्वास और उसके आधिकारिक कर्त्तव्यों के बीच टकराव आ जाएगा। प्राचीन जगत में देश की सरकार और उस देश के ''देवता'' या ''देवताओं'' के बीच गहरा सम्बन्ध होता था। क्या यहोवा उसे अपनी आधिकारिक भूमिका निभाने के लिए दोषी ठहराएगा जिसमें अपने राजा के साथ मूर्तियों वाले मन्दिरों में जाना शामिल था? इस कारण उसने एलीशा से कहा, ''एक बात तो यहोवा तेरे दास के लिए क्षमा करे, कि जब मेरा स्वामी रिम्मोन के भवन में दण्डवत करने को जाए, और वह मेरे हाथ का सहारा ले,[18] और यों मुझे भी रिम्मोन के भवन में दण्डवत करनी पड़े, तब यहोवा तेरे दास का यह काम क्षमा करे कि मैं रिम्मोन के भवन में दण्डवत करूं'' (आयत 18)। रिम्मोन अरामियों का बाल देवता था जो अगर प्रधान नहीं तो अराम के मुख्य देवताओं में से एक था।

मुझे नामान के अपने नये मिले विश्वास के साथ मेल खाता जीवन जीने की चुनौती को समझने और आने वाली समस्याओं पर चिन्तित होने के लिए उसकी तारीफ़ करनी आवश्यक है। आज कुछ लोग जो प्रभु के पास आते हैं उन्हें नये जीवन की उस अवधारणा का पता नहीं होता जिसमें उन्हें रहना है (रोमियों 6:3, 4) और यह कि उसमें उनकी पिछली जीवन शैली के साथ क्या टकराव होगा।

परन्तु आयत 18 में नामान के शब्दों के सम्बन्ध में मैं चिल्लाना चाहता हूं, ''क्या तुम्हें उन खतरों की समझ नहीं आती, जो तुम्हारे सामने आ रहे हैं? यदि तुम रिम्मोन को देवता न भी मानो और उसे बलिदान न भी चढ़ाओ [देखें आयत 15], यदि तुम उसके मन्दिर में जाकर झुकते हो, तो यह *लगेगा* कि तुम उसकी पूजा कर रहे हो। इस प्रकार तुम उस सकारात्मक प्रभाव को जो दूसरों पर डाल सकते थे, नकार रहे होंगे। इसके अलावा रिम्मोन की पूजा के लिए किया गया दिखावा उन्हें मूर्तिपूजा में वापस खींच सकता है। अपने पूरे मन से मैं तुम से विनती करता हूं कि अपने आपको किसी भी चीज़ से जो मूर्तिपूजा से जुड़ी हो चाहे वह कैसी भी हो दूर रखो!''

मैं तो ऐसे ही जवाब देता, पर एलीशा ने केवल इतना कहा, ''कुशल से विदा हो'' (आयत 19क)। कुछ लोग इसका अर्थ यह लेते हैं कि नबी ने नामान को रिम्मोन के मन्दिर में जाने की अनुमति दे दी। कुछ तो इसे गलत शिक्षा के साथ समझौता करने को उचित ठहराने के लिए भी इस्तेमाल करते हैं। परन्तु एलीशा की बात से स्वीकृति और न अस्वीकृति की बात मिलती है।[19] यह इब्रानी भाषा का ''अलविदा'' शब्द है।[20]

यह सवाल फिर बना रहता है कि एलीशा ने नामान को रिम्मोन के मन्दिर में जाने से रोकने पर ज़ोर क्यों नहीं दिया। उसकी खामोशी का विवरण देने के लिए यह सम्भव बातें हो सकती हैं:

- अभी के लिए एलीशा नामान की ज़बर्दस्त आत्मिक उन्नति से रोमांचित हो गया था। यहोवा के लिए यह एक बड़ी विजय थी!
- एलीशा ने इस बात को समझा कि नामान विश्वास में अभी नया है और उसने उस सिपाही पर उससे अधिक आत्मिक बोझ नहीं डालना चाहा जितना वह अभी सह सकता था। नये उगे पौधे को बड़ी कोमलता से सम्भालना पड़ता है।
- नामान को अपने कार्यों में टकराव को देखने की समझ पहले ही थी इसलिए एलीशा ने भरोसा किया कि वह आत्मिक रूप में बढ़ता रहेगा और अन्त में स्वयं सही निर्णय ले सकेगा।

शायद ऊपर दी गई बातें और अन्य बातें इसमें शामिल थीं कि एलीशा ने स्थिति को ऐसे क्यों सम्भाला। आज भी हम किसी भावी चेले को सिखाने के लिए उसे बपतिस्मा देने से पहले वह *सब* बताने का प्रयास नहीं करते जो उसे जानना आवश्यक होता है। बपतिस्मा लिए जाने के *बाद* उच्च शिक्षा, *बहुत* शिक्षा आवश्यक है (मत्ती 28:19, 20)

सारांश (5:19ख)

एलीशा के यह कहने के बाद कि ''कुशल से विदा हो,'' नामान आराम की ओर ''चल पड़ा'' (2 राजाओं 5:19ख)। पाठ को समाप्त करते हुए मुझे दमिश्क में उसके वापस आने पर

विचार करना अच्छा लगेगा। उस छोटी यहूदी लड़की के दृष्टिकोण से घटनाओं की शृंखला की कल्पना करें जिसने उसे सामरिया में नबी के पास भेजा था:

> वह अपने सुझाव से बनी उत्तेजना से चकित थी। वह नामान और उसके दल के नगर से निकलने के समय अपनी मालकिन के साथ खड़ी थी, सेनापति का चेहरा बीमारी से बिगड़ा हुआ था पर उसका इरादा पक्का था। दिन बीतते गए, और वह हैरान थी कि क्या हो रहा होगा, और कई बार प्रार्थना करती होगी। एक दिन उसने यह शोर सुना कि सेनापति नामान वापस आ गया है वह दरबार की ओर भागी। पहले तो उसने अपने स्वामी को पहचाना ही नहीं। उसकी त्वचा साफ़ हो गई थी, उसकी आंखें चमक रही थीं और उसके चेहरे पर मुस्कान थी। रथ के रुकने पर वह नीचे उतरा और वहां आया जहां वह थी, और झुकते हुए बड़ी गम्भीरता से कहने लगा, ''धन्यवाद।'' शाम को नामान ने उसे यहोवा परमेश्वर के आगे प्रार्थना के समय अपने परिवार को लाने के लिए कहा। एक दूसरे के साथ सटकर बैठे हुए समूह में उसने धन्यवाद की अपनी प्रार्थना की। एक बार फिर से वह एक प्रसन्न, परमेश्वर का भय मानने वाले परिवार का अंग बन गई थी![21]

परमेश्वर ने एक मूर्तिपूजक के जीवन में उसे विश्वास में लाने के लिए काम किया था। यदि आप प्रभु में विश्वास नहीं रखते या आपने उसकी आज्ञा नहीं मानी है, तो हो सकता है कि वह आपको अपनी ओर लाने की कोशिश करने के लिए आपके भी जीवन में काम कर रहा हो। शायद वह आपको उसके लिए आपकी आवश्यकता से अवगत कराने के लिए इस पाठ के द्वारा आपके मन को तैयार करने पर काम कर रहा है। हो सकता है आपको चमड़ी का कोढ़ न हो, पर आपको आत्मा का ''कैंसर'' है जिसे ''पाप'' कहा जाता है (रोमियों 3:23) और उसका इलाज शारीरिक बीमारी से कहीं अधिक मुश्किल है (6:23)। नामान ने अपने घमण्ड को एक ओर रखकर परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार किया। मेरी प्रार्थना है कि आप भी वैसा ही करेंगे (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)!

टिप्पणियां

[1]इस पाठ का मुख्य शीर्षक जेम्स ई. स्मिथ, *दि बुक्स ऑफ़ हिस्ट्री,* ओल्ड टेस्टामेंट सर्वे सीरीज़ (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1995), 563, 565 से लिया गया। [2]हेनरी बलंट, *लैक्चर्स ऑन द हिस्ट्री ऑफ़ एलीशा* (फिलाडेल्फिया: हरमन हूकर, 1839), 83; एडम क्लार्क, *दि होली बाइबल विद ए कमैंट्री एंड क्रिटिकल नोट्स,* अंक 2, *जोशुआ–एस्तर* (न्यू यॉर्क: अबिंग्डन–कोक्सबरी प्रैस, तिथि नहीं), 495. [3]इस चर्चा के लिए एक तर्क यह है कि यहूदी कोढ़ियों की तरह नामान को अलग से नहीं रखा गया लगता। परन्तु याद रखें कि अराम में स्वास्थ्य और साफ़ सफ़ाई पर परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए नियम यहूदियों को मूसा की व्यवस्था में दिए गए नियमों जैसे नहीं थे। [4]मैरिल एफ. अंगर, *दि न्यू अंगर'स बाइबल डिक्शनरी,* संपा. आर. के. हेरिसन (शिकागो: मूडी प्रैस, 1988), 357. [5]जे. जे. रीव, ''एलीशा,'' *दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संपा. जेम्स ओर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1939), 2:935. [6]क्लाइड एम. मिलर, *फर्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, अंक 7 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1991), 332. [7]सी. एफ. केल एंड एफ. डेलिश, ''1 और 2 किंग्ज़,'' *कमैंट्री ऑन ओल्ड एंड टेस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्ज़, फर्स्ट एंड सेकंड क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेमाया, ऐस्तर* (पीबॉडी, मैसाचुएटस: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 317.

[8]अधिकतर अमेरिकी स्रोता यहूदियों और अरबियों के बीच आधुनिक सीमा के झगड़ों से परिचित हैं। किसी ऐसी तुलना या उदाहरण का इस्तेमाल करें जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [9]यह जानकारी NIV वाले मेरे संस्करण में टिप्पणियों में दी गई है। CJB में चांदी के 660 पौंड है। [10]स्मिथ, 563. आप जहां रहते हैं वहां इन धातुओं की वर्तमान कीमत जानने के लिए कीमती धातुओं का कारोबार करने वाले किसी व्यक्ति से पूछ सकते हैं।

[11]अमेरिकी श्रोता क्रूस के झण्डे से परिचित हैं। जहां आप रहते हैं वहां ऐसे ही काम को दर्शाने वाला कोई संकेत हो सकता है। [12]जेम्स ए. मोंटगोमरी, ''किंग्स,'' *इंटरनैशनल क्रिटिकल कमैंट्री* (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1951), 375; जेम्स बर्टन कॉफ़मैन एंड थेलमा बी. कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स,* जेम्स बर्टन कॉफ़मैन कमैंट्रीज़, दि हिस्टोरिकल बुक्स, अंक 6 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1992), 68 में उद्धृत। [13]नामान ने पूरी कहानी में परमेश्वर के पवित्र नाम का इस्तेमाल किया (NASB में इसका अनुवाद केवल ''LORD'' हुआ)। उसे कम से कम इस्राएलियों के परमेश्वर का कुछ ज्ञान तो था। क्या उसे यह ज्ञान उस छोटी गुलाम लड़की से मिला था? [14]डोनाल्ड जे. वाइसमैन, *1 एंड 2 किंग्स: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1993), 207. [15]*दि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 2:1122 में ई. के. वोगल, ''जोर्डन।'' [16]इस वाक्यांश का अधिकतर भाग एफ़. डब्ल्यू. क्रमचर, *एलीशा, ए प्रोफेट फ़ॉर अवर टाइम्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 152-53. [17]जे. राबर्ट वेनॉय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 532. [18]लोगों में चलते समय सेवक के हाथ में हाथ डालना पूर्वी राजाओं की परम्परा थी। ''आपका सहारा'' का संकेत ''सहारा लेने'' के लिए था। राजा जिस व्यक्ति का ''सहारा'' लेता था वह आम तौर पर उसका विश्वसनीय और भरोसेमंद सलाहकार होता था (2 राजाओं 7:2 से तुलना करें)। [19]केल एंड डेलिश, 321. [20]मिलर, 336.

[21]इस दृश्य का सुझाव इलेन जे. फलैक्चर, *एलीशा, द मैरेकल प्रोफेट,* (वाशिंगटन, डी. सी.: रिव्यू एण्ड हैरल्ड पब्लिशिंग एसोसिएशंस, 1960), 48; और थियोडोरा विलसंग, *वैबचू'स बाइबल स्टोरी* (लंदन: वरचू एण्ड कं., तिथि नहीं), 300 द्वारा सुझाया गया था।